शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अप्रैल 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

प्रभा खेतान के उपन्यासों में नारी मुक्ति के स्वर

श्रीमती रीता सोनी (शोधार्थी)
डॉ.आशा अग्रवाल (निर्देशक)
अटलबिहारी वाजपेयी कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

आज की स्त्री मुक्ति चाहती है, अपनी अस्मिता वापस चाहती है। स्त्री एक ऐसी प्रवृत्ति में ढल गई है कि वह परिवर्तन चाहती है और यह परिवर्तन शीघ्र संभव नही हो सकता यह वह जानती है। सदियों से जिस नीति को अपनाने में वह आश्वस्त हो चुकी थी उसमें कुछ समय तो अवश्य लगेगा। जिस स्त्री को धर्म का उच्च स्वरूप प्राप्त था उसमें पुरूष के अलावा स्त्री को अपनी भी कुछ मानसिक दुर्बलताएँ थी जिसके कारण वह संकुचित होती है। वह केवल स्त्री होकर ही जी रही थी। इस प्रक्रिया में उसने अपनी पहचान एक ही दिन में नहीं बदली बल्कि उसे वर्षों लगे अपनी पहचान बनाने में। इसलिए आज प्रत्येक नारी अपने अधिकार एवं स्वायत्ता पाने के लिए सब तरह से संघर्षरत है। प्रभाजी के उपन्यास साहित्य में ऐसी ही नारी की विभिन्न समस्याओं का विस्तृत चित्रण हुआ है।

भूमिका

चेतना शब्द की व्युत्पत्ति चित्त से हुई है, जिसका अर्थ है मन और चेतना अर्थात् मनन करना, सोचना, विचारना। दूसरे शब्दों में - " चेतना मूल्यपरक ईकाई है जो स्वभावतः परिवेषगत दबावों से उत्पन्न होती है और अनिवार्यतः परिवेष का विखण्डन करती है।"1. प्राचीन काल से होते आ रहे शोषण और दमन के प्रति नारी चेतना, आत्मसम्मान, आत्मचेतना, आत्मगौरव, समता और समानाधिकारी की पहल का दूसरा नाम है। नारी को जहाँ ''मैं'' की चिंता का अहसास है, वहीं से नारी चेतना की शुरूआत है। अब भावना की अपेक्षा बुद्धि की कसौटी पर और लिंगात्मक की अपेक्षा गुणात्मक कसौटी पर व्यक्ति के मूल्यांकन का सूत्रपात होगा तभी ' नारी चेतना' के चिंतन को बल मिलेगा।

नारी सृष्टि का आधार है इसलिए उसे विधाता की अद्‌वितीय रचना कहा गया है। नारी मानव जाति की संस्कृति एवं सभ्यता का महत्वपूर्ण अंग है, क्योंकि सृष्टि के आरंभ से ही सृष्टि के निर्माण व संचालन में नारी की अहम् भूमिका रही है। गर्भधारण से लेकर संतान के जन्म एवं उसके पालन पोषण का कार्य भी नारी ही करती है। ईश्वर ने नारी एवं पुरूष को समान शक्ति, प्रतिभा एवं अधिकार देकर इस सृष्टि की रचना की है। जयशंकर प्रसाद ने भी कामायनी में नारी के विभिन्न रूपों को प्रस्तुत किया है, इसमें श्रद्धा भारतीय नारी की दया, क्षमा, ममता का समन्वित रूप है-

"नारी तुम केवल श्रद्धा हो,
विष्वास रजत नग-पग तल में
पीयूष स्त्रोत सी बहा करो,
जीवन के सुन्दर समतल में।2

नारी में भारतीय संस्कृति के आदर्श रूप-विद्‌या का सरस्वती में धन का लक्ष्मी में, पवित्रता का गंगा में, पराक्रम का दुर्गा में, सौंदर्य का रति में

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

विद्यमान है, फिर भी हमारे समाज में पुरूषों को ही स्त्रियों से श्रेष्ठ माना जाता है। अपने फैसले स्वयं लेने का अधिकार नहीं है। उनके जीवन से संबंधित सारे फैसले पिता, पति या उसका पुत्र लेता है, वह स्वयं नहीं। हमारे शास्त्रों - पुराणों में हजारों संदर्भ ऐसे है, जिनमें नारी को वस्तु या सम्पत्ति माना गया है। आज भी सम्पूर्ण व्यवस्था का निर्माण पुरूषों, द्वारा होने के कारण नारी की भूमिका दोयम दर्जे की रही है। कारण विदेशी आक्रमण रहा हो या देश के भीतर किसी प्रकार की शासन व्यवस्था ... इतिहास साक्षी है जब-जब यह प्रवृत्तियाँ उभरी नारी की सामाजिक सुरक्षा खतरे में पड़ गई और सामाजिक असुरक्षा के बढ़ते ही प्रगति के मार्ग पर बढ़ते उसके पैर रूक गये या रोक दिये गये।"3

प्राचीनकाल अर्थात प्रागैतिहासिक युग से ही नारी किसी न किसी रूप में चिन्तन का विषय रही है। उस काल का समाज मातृसत्तात्मक था। उस युग में माता को समस्त अधिकार प्राप्त होते थे। वैदिक युग में नारी का स्थान श्रेष्ठ एवं सम्मान जनक था। वेद एवं शास्त्रों में पारंगत होने के कारण वे ऋचाओं की भी रचना स्वयं करती थी। इस काल में नारी के सन्दर्भ में कहा भी गया था कि इस समय "स्त्रियों को अलग या परदे में नही रखा जाता था, वह विद्वान एवं ओर उसे बाह्य सृजक के रूप में माना गया तो दूसरी उस पर अनेक बंधन लगाये गये। वह पुरूषों के अधीन होने लगी। महाकाव्य काल तक आते-आते समाज में नारी देवी और दानवी इन दो रूपों में विभाजित हो गयी। समाज द्वारा निर्धारित आदर्शों का पालन करने वाली देवी कहलाने लगी और इन नियमों को ठुकराने वाली दानवी।"4 इस युग में नारी को पतिव्रता की जंजीरों में बांधकर इतना जकड़ दिया गया कि उसके स्वतंत्र अस्तित्व का नामोनिशान नहीं रहा। पुरूष ने हर क्षेत्र में नारी को गुलाम बनाकर अपनी श्रेष्ठता स्थापित की। जिसके कारण नारी एक व्यक्ति न रहकर पुरूष के भोग की वस्तु बनकर रह गई। वह केवल सम्पत्ति, उपभोग और विलास का प्रतीक बन गई। इस सन्दर्भ में फेडरिक एंग्लेस ने लिखा है कि "वह पुरूष की वासना की दासी, संतान उत्पन्न करने का यंत्र मात्र बनकर रह गई। बाद में धीरे-धीरे, तरह-तरह के आवरणों में ढककर, सजाकर आंशिक रूप में थोड़ी नरम शक्ल देकर उसे पेश किया जाने लगा।"5 आधुनिक युग में नारी में नई चेतना का संचार हुआ। इस कारण नारी जीवन में अनेक परिवर्तन हुए। इस काल में शिक्षा एवं आर्थिक स्वतंत्रता के कारण नारी अत्यधिक स्वावलंबी हो गई। इसकी अपूर्व पहल समकालीन हिन्दी, उपन्यास साहित्य में नजर आई। प्रारम्भिक उपन्यास साहित्य में जहाँ नारी के व्यक्ति स्वातंत्र्य को उभारा, वहीं जीवन की असंख्य जटिलताओं को शामिल किया गया। समकालीन लेखिकाओं ने अपनी रचनाओं में मानवीय अधिकार और अस्मिता से जुड़े सवालों को उठाया। साथ ही हिन्दी की विभिन्न लेखिकाओं ने लेखन के मोर्चे को भी संभाला। आज भारतीय नारी अपने अधिकारों एवं स्वायत्ता को पाने के लिए सब तरह के शोषण से मुक्त होने के लिए प्रयासरत है। प्रभा खेतान के उपन्यास साहित्य में ऐसी ही नारी की विभिन्न समस्याओं का विस्तृत चित्रण हुआ है।

प्रभा खेतान के उपन्यासों में नारी मुक्ति के स्वर

प्रभाजी के उपन्यास नारी मुक्ति और यातना की लंबी दास्तान है। उनके उपन्यासों में शोषण की यात्रा बड़ी कष्टपद है। प्रभाजी का व्यापार जगत से जुड़ी होने के कारण उसी का वर्णन प्रायः

उनके उपन्यासों में अधिक होता है। उनके उपन्यास साहित्य छिन्नमस्ता, पीली आंधी, अग्निसंभवा, आओ पेपे घर चले, अपने-अपने चेहरे इत्यादि में नारी शोषण के ऐसे कई उदाहरण प्रस्तुत किये गये है। 'छिन्नमस्ता' की प्रिया को बचपन से ही भाई पर निर्भर रहना पड़ा। वह बार-बार भाई की वासना का शिकार बनी। जब उसने विरोध किया तो मिली गहरी घृणा और उपेक्षा। इतना ही नहीं छोटी-छोटी जरूरतों के लिए मोहताज भी होना पड़ा। किन्तु फिर भी वह निराश नहीं हुई, इससे बाहर निकलने के लिए उसने सारी शक्ति लगा दी। इस सन्दर्भ में डॉ.उमा शुक्ल ने टिप्पणी (समीक्षा) करते हुए कहा है कि 'छिन्नमस्ता' उपन्यास में प्रिया की बचपन से लेकर अड़तालिस वर्ष की आयु तक की कहानी है। ... समाज में नारी पर जितने अत्याचार अन्याय हो सकते हैं, सारे प्रिया पर होते हैं। वह इससे निराश नहीं होती अपितु इससे बाहर निकलने के लिए सारी शक्ति लगा देती है। 'पीली आंधी' उपन्यास की नायिका सोमा का भी शोषण होता है किन्तु देहिक स्तर पर नहीं, आर्थिक स्तर पर। उपन्यास की नायिका को नपुंसक, गौतम से विवाह इसलिए करना पड़ता है, क्योंकि उसके पास दहेज के लिए पैसे नहीं थे। मारवाड़ी परिवार में जहाँ बेटा नहीं होता उन घरों की बेटियों का विवाह मुश्किल से होता है। सोमा का भाई नहीं था। सोमा को गौतम पसंद नही था, फिर भी पिता के कहने पर विवाह करना पड़ता है। निष्कर्षतः दहेज के कारण केवल सोमा का ही शोषण नहीं हुआ बल्कि कई नारियों का शोषण होता आया है। दहेज नारी के लिए एक समस्या बन गई है। इसके कारण नारी को ताउम्र तिरस्कृत होना पड़ता है। ऐसे ही तिरस्कार को प्रभाजी ने अपने उपन्यास में उजागर करते हुए समाज में व्याप्त कुरीतियों को समाप्त करने का प्रयास किया है। 'अग्निसंभवा' की आइवी का पति शराब के नशे में दिन-रात उसे पीटता है कहीं से थोड़े-से पैसे मिल जाए। इसके लिए वह रात को जागकर कपड़े सिलती है, लेकिन उसका पति सारे पैसे शराब में उड़ा देता है। इस तरह नारी का हर क्षेत्र में किसी न किसी रूप में शोषण हो रहा है और उसे पुरूषों के अत्याचारों को मूक बनकर सहने के लिए विवश होना पड़ता है।

प्रभाजी के उपन्यासों में नारी आर्थिक दृष्टि से स्वावलंबी होने को अत्यधिक महत्व देती है। नारी शोषण का एक कारण उसका आर्थिक दृष्टि से पराधीन होना है। प्रभा खेतान जिस समाज से थी, उस समाज में व्यक्ति की प्रतिष्ठा का मूल्य धन के आधार पर किया जाता था। 'आओ पेपे घर चलें' की प्रभा स्वीकार करती है कि स्त्री की स्वतंत्रता उसके पर्स में निहित है। अतएव वह धनार्जन हेतु विदेश जाती है और वहाँ से प्रशिक्षण प्राप्त कर भारत आकर ब्यूटी पार्लर चलाती है। 'छिन्नमस्ता' की प्रिया और उसके पति में आर्थिक दृष्टि से प्रतिस्पर्धा है। नरेन्द्र को प्रिया का व्यवसाय करना सुहाता नहीं है। प्रिया के मन में प्रश्न उभरता है कि नरेन्द्र एक वर्ष में लगभग एक करोड़ रूपये कमाता है। जबकि वह स्वयं पांच-सात लाख रूपये कमाती है। फिर भी उसे प्रिया के रूपयों से जलन क्यों होती है ? वह प्रिया के बढ़ते व्यवसाय का विरोध करते हुए कहता है कि दरअसल तुम्हें इतनी खुली छूट देने की गलती मेरी ही थी। मुझे पहले ही चिड़ियों के पंख काट डालने चाहिए थे। पर मैं तुम्हारी बातों में आ गया। तुम्हारे इस भोले चेहरे के पीछे एक मक्कार औरत का चेहरा है।6 इन पंक्तियों में स्वच्छंद उड़ान भरने वाली, अपनी महत्वाकांक्षा को पूर्ण करने वाली नारी का शोषण वर्णित है।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

वस्तुतः प्रिया नारी शोषण की भयावह त्रासदी का उदाहरण प्रस्तुत करती है। 'अपने-अपने चेहरे' की रमा आर्थिक सम्पन्नता प्राप्त करने हेतु बुटिक का व्यवसाय करती है। 'अग्निसंभवा' की आइवी, 'एड्स' की कुक्कू, 'पीली आंधी' की सोमा, और 'स्त्रीपक्ष' की वृंदा आदि ऐसी नारियाँ है जो अर्थ प्राप्ति के लिए अथक परिश्रम करती हैं। अपना व्यक्तित्व निर्माण करना चाहती हैं। वह प्राचीन मान्यताओं से मुक्त होकर पुरूष के समक्ष प्रतिष्ठित होने के लिए प्रयत्नशील है। आधुनिक शिक्षित नारी के जीवन में निरन्तर परम्परागत रूढ़ियां समाप्त होती जा रही है। इतना ही नहीं उसने समाज में एक नया दर्जा एवं एक नयी समाजिक महत्ता भी प्राप्त कर ली है। वर्तमान नारी परम्परागत रूढ़ियों को नकार कर घर की चार दीवारी से स्वतंत्र हो चुकी है। वह सामाजिक स्वतंत्रता के साथ-साथ आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए संघर्षरत है। इस सन्दर्भ प्रथा जी का मानना था कि "मुक्ति की पहली शर्त स्त्री की आर्थिक स्वतंत्रता है। यदि इस एक शर्त को कोई औरत पूरा कर लेती है तो वह अपनी जिन्दगी की आधी लड़ाई जीत लेती है। मैंने अपनी लड़ाई स्वयं लड़ी है।"7 आज तक जितनी स्वतंत्रता स्त्री ने हासिल की है, वह संघर्ष करके ही हासिल की है। 'आओ पेपे घर चलें' की नायिका प्रभा, अपनी प्रतिभा एवं संकल्प शक्ति से नई शक्ति और चुनौती के रूप में उभरती है। 'आओ पेपे घर चलें' की प्रभा अपनी मर्जी से जीने के लिए रूपयों को महत्व देकर आर्थिक रूप से स्वतंत्र होना चाहती है।

जीवन में केवल पत्नी या माँ बनकर नहीं रहना चाहती। वह माँ और पत्नी की भूमिका छोड़ अपनी अलग पहचान बनाना चाहती है। जिसके लिए वह अपना रेस्टोरेंट खोलती है। साथ ही प्रभा से कहती है कि "बिना अपने पैरों पर खड़े हुए तुम कोई भी लड़ाई नहीं लड़ सकती"8 कैथरीन की आण्टी भी आर्थिक स्वतंत्रता को जीने की पहली शर्त मानती है। 'अपने-अपने चेहरे' की रमा नारी स्वतंत्रता लिए आर्थिक सबलीकरण को विशेष महत्व देती है। वह कहती है कि "औरत बिना स्वावलंबी हुए स्वतंत्र नहीं हो सकती।"9

स्त्री ने हमेशा स्वयं को दोषी माना है परन्तु यदि उसमें नारी अस्मिता एवं आत्म सम्मान का भाव पनप जाये तो वह कभी स्वयं को दोषी नहीं मानेगी। उसकी यह कमी आर्थिक स्वावलंबन से ही पूरी हो सकती है। अर्थात् आर्थिक स्वतंत्रता स्त्री की महत्वपूर्ण आवश्यकता है। 'छिन्नमस्ता' उपन्यास की नायिका नीना अपने नाजायज संतान के भारत से दबे दुःखपूर्ण जीवन से निजात पाकर सुख को अर्जित करना चाहती है। वह आर्थिक रूप से सम्पन्न होकर खड़ी होना चाहती है। क्योंकि उसका मानना है कि "अपने पैरों पर खड़ी स्त्री का कोई निरादर नहीं करता।"10

दूसरी तरफ 'तालाबंदी' उपन्यास की सुमित्रा इतनी कोमल स्वभाव एवं संवेदनशील है जो जरा से दबाव में समझौते के लिए तैयार है। वह पति से अत्यधिक प्रेम करती है। उसने स्वयं को पूर्णतः पति पर न्यौछावर कर दिया है। उसके मन में किसी के प्रति कोई शिकायत नहीं है। प्रभाजी का उपन्यास सुमित्रा के माध्यम से एक ऐसी भारतीय नारी की छवि को प्रस्तुत करता है, जो पति, परिवार और घर पर निःस्वार्थ भाव से अपने आपको न्यौछावर कर आदर्श पत्नी होने का प्रमाण देती है।

प्रभाजी के उपन्यास साहित्य में इन सभी बातों के अलावा नारी की बदलती मानसिकता का वर्णन भी मिलता है। 'अपने अपने चेहरे' उपन्यास

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

की रमा, 'पीली आंधी' की सोमा, 'छिन्नमस्ता' की प्रिया, 'आओ पेपे घर चले' की प्रभा और 'अग्निसम्भवा' की आइवी कद समाज से टकराकर अपने आपको भावात्मक स्तर पर लहूलुहान करते हुए अपने अस्तित्व को नये सिरे से परिभाषित करती है।"11 'आओ पेपे घर चलें 'की प्रभा स्वतंत्र अस्तित्व की स्थापना के लिए अपना देश छोड़कर अमेरिका में युद्ध स्तर पर क्रियाशील हो जाती है। 'छिन्नमस्ता' की प्रिया आधुनिक नारी शक्ति की पहचान बनकर अपने चरित्र को सदियों से शोषित पीड़ित नारी की पंक्ति से अलग करना चाहती है। प्रिया समाज और परंपरा की जड़ मूल्यों को चुनौती देकर अपनी खोई अस्मिता को पुनः स्थापित कर एक सशक्त नारी के रूप में खड़ी होना चाहती है। इस सन्दर्भ में डॉ.. वैशाली पाण्डे का कथन है कि "प्रिया का यह व्यवहार आधुनिक नारी के उस रूप को उद्घाटित करता है, जो पुरूष प्रधान समाज के अत्याचार के विरोध में खड़ी रहकर अपनी क्षमता को साबित करती है। शोषण के सामने चुनौती बनकर खड़े रहने की क्षमता आज की नारी में आ चुकी है और प्रिया उसी नारी का प्रतिनिधित्व करती है।"12

'अपने-अपने चेहरे' की रीतु अपने पति के जीवन में आयी दूसरी औरत की पीड़ा से ग्रस्त है। प्रभाजी की रीतु इस उपन्यास में उस आधुनिक नारी का प्रतिनिधित्व कर रही है जो अपने जीवन में आयी दूसरी औरत की त्रासदी को सहन नही करती और ना ही समझौते के लिए पति कुणाल के पास गिड़गिड़ाती है। बल्कि पति का घर हमेशा के लिए छोड़कर अपने अस्तित्व की पहचान बनाने के लिए नई राह अपनाती है। 'पीली आंधी' उपन्यास की सोमा अपने परिवार की झूठी मान-मर्यादा के बंधनों को तोड़कर प्रोण् सेन से विवाह करती है। परंपरागत संस्कारों को तोड़करवह केवल पारिवारिक मान-मर्यादा और नैतिकता की देहरी ही नही लांघती बल्कि सुरक्षित अर्थसत्ता के जाल को तोड़कर सामाजिक संस्कारों की सीमाएं भी ध्वस्त करती है। 'अग्निसंभवा' की आइवी एक विद्रोही पत्नी के रूप में प्रस्तुत होती है। जो विवाह तो करती है, परन्तु पति से मुक्ति (तलाक) प्राप्त कर हांगकांग चली जाती है। यहाँ वह अपने आत्मसम्मान और स्वाभिमान को बरकरार रख मेहनत के बलबूते पर ड्राइवर से ब्रांच मैनेजर के पद पर पहुँचती है। इसके अलावा ' एड्स' उपन्यास की नारी पात्र कुक्कु अपने स्टेटस सिमबल के लिए हजारो रूपये बर्बाद करती है। पचास की उम्र में पहुंचकर भी उसमें जिंदगी जीने की चाह है। असल में वह उन स्त्रियों में से है, जिन्हें खाने-पहनने ऐश करने का शौक होता है। इस प्रकार प्रभाजी ने अपने उपन्यासों में नारी की बदलती मानसिकता के साथ-साथ महत्वाकांक्षी और स्वावलम्बी नारी का चित्रण भी किया है। जो अपने अस्तित्व की रक्षा हेतु प्रयत्नशील है ओर अपने टूटे हुए अस्तित्व से मुकाबला करके नये रास्तों की खोज करती है।

निष्कर्ष

प्रभाजी के उपन्यास साहित्य में नारी के प्रति संवेदना प्रमुख रूप से देखी जा सकती है। उनके उपन्यास साहित्य की नारी अस्तित्व और अस्मिता के साथ नई जमीन तलाशने के प्रति वचनबद्ध प्रतीत होती है। नारी संघर्ष के यथार्थ को पैनेपन से खोलते हुए प्रभाजी ने नारी के व्यक्तित्व की प्रतिष्ठा और सही मायने में परिवार में उसकी अहम् भूमिका पर बल दिया है। उन्होंने अन्याय के विरोध का, अस्तित्व बोध का औघर अत्याचार के विरोध में खड़ी रहने की लड़ाकूवृत्ति का न केवल परिचय दिया है, अपितु

इस चिंतन को बल भी प्रदान किया है। साथ ही साथ प्रभाजी ने अपने उपन्यासों की नारी के माध्यम से एक ऐसे समाज को स्थापित करने की कल्पना की है, जो नारी के प्रति अत्यधिक मानवी एवं अधिकार सम्पन्न हो।

संदर्भ ग्रन्थ

1. रोहिणी अग्रवाल, बहस, आकाश चाहने वाली लड़की के सवाल- हंस मार्च 2001, पृ. 169

2. कामायनी लज्जा सर्ग, जयशंकर प्रसाद, पृ. 73

3. आशारानी व्होरा - नारी विद्रोह के भारतीय मंच पृ. 155

4. च्त्म्डस्।ज्।. डल्ैंछब् ैं।प्छज्ैं व्थ् प्छक्प्। 5. ैंॅ।डप् क्।ल्।छ।क् ैं।त्।ैंॅ।ज्प्ए थ्प्त्ैंज् म्क्प्ज्प्व्छ 1990 च्।ळम् छव्ण् 10ए11

5. स्त्रीवादी साहित्य विमर्श: जगदीश चतुर्वेदी पृ. 206

6. महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में पुरूष चरित्र, डॉ. हेमलता सुखदेव कंचन कर, पृ. 105

7. छिन्नमस्ता- प्रभा खेतान पृ. 11

8. प्रभा खेतान का रचना संसार- डॉ..के आशा, पृ. 44

9. आओ पेपे घर चले- प्रभा खेतान पृ. 91, ऐवम 71

10. छिन्नमस्ता - प्रभा खेतान पृ. 145

11. स्त्रीवाद और महिला उपन्यासकार - डॉ.. वैशाली पाण्डे पृ 186